

---

# Shri JagadambarenuKadevi Stotram

---

## श्रीजगदम्बारेणुकादेवीस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri JagadambarenuKadevi Stotram

File name : jagadambAreNukAdevIstotram.itx

Category : devii, shrIdharasvAmI, stotra

Location : doc\_devii

Author : Shridharasvami

Proofread by : Manish Gavkar

Description/comments : shrIdharasvAmI stotraratnamAlIkA

Latest update : February 11, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीजगदम्बारेणुकादेवीस्तोत्रम्



(भुजङ्गप्रयातवृत्तम्)

भजे रेणुकां सर्वलोकैकवेद्यां  
शिवां शान्तरूपां मनोवागतीताम् ।  
निजानन्दपूर्णां सदाद्वैतरूपां  
परां वेदगम्यां परब्रह्मरूपाम् ॥ १ ॥

सदान्चारसद्भक्तिबोधादिभिर्या  
गुरोरङ्घ्रिशुश्रूषया मुख्यवृत्त्या ।  
सुवेद्यां सुलभ्यां परानन्दपूर्णां  
भजे रेणुकां तां विमोहप्रशान्त्यै ॥ २ ॥

श्रुतिर्नेति नेतीति सर्वं निरस्य  
वदत्येकमाद्यं विभुं चित्सुखं यत् ।  
तदेवावशिष्टं स्वरूपं विशुद्धं  
भजे रेणुकां तां सदा मृत्युहीनाम् ॥ ३ ॥

यदानन्दसिन्धौ निमग्नो न पश्य-  
त्यहो कर्मजालं फलं वा तदीयम् ।  
न चैवं न शैवं जगन्नैव मायां  
चिदेकस्वरूपां भजे रेणुकां ताम् ॥ ४ ॥

अनेकान्तिकां सर्वभेदादिगम्यां  
तमोऽज्ञानदुःखान्तिगां शुद्धरूपाम् ।  
सदाऽध्यात्मविद्याप्रदानैकशीलां  
भजे रेणुकां मुक्तिसौख्याधिदेवीम् ॥ ५ ॥

त्रितापप्रशान्त्यै समाराध्यते या  
सदा जीवलोके स्वसौख्यप्रदात्री ।  
भवाम्भोधिसेतुं चिदानन्दकन्दां

भजे रेणुकां ज्ञानमुद्रैकलक्ष्याम् ॥ ६ ॥

सदा भक्तहृत्कौमुदीं भद्रभद्रां

समोङ्कारवाच्यां वरेण्यां शरण्याम् ।

स्वभक्तार्तिनाशां शुभाङ्गां गुणाढ्यां

भजे रेणुकां भक्तभाग्यां सुरूपाम् ॥ ७ ॥

सदा भक्तवात्सल्यपूर्णां सुरम्यां

सुरेन्द्रादिभिः स्तूयमानां सुसूक्तैः ।

सदा भक्तवृन्दैश्च संसेव्यमानां

भजे रेणुकां भक्तभाग्यां भवानीम् ॥ ८ ॥

पठेद्यो सदा भक्तियुक्तो विशुद्धः

स्ववर्णाश्रमाचारतो नित्ययुक्तः ।

स मुक्तः कृती रेणुकायाः प्रसादात्

सदा राजते राजते लोकपूज्यः ॥ ९ ॥


इति श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य सद्गुरु भगवान्

श्रीधरस्वामीमहाराजविरचितं श्रीजगदम्बारेणुकादेवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।


रचनास्थानं - मातापुर क्षेत्रं

Proofread by Manish Gavkar

---

——  
*Shri Jagadambarenuka Devi Stotram*

pdf was typeset on February 12, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

